B.A. Part I
Hindi Hons
Paper - I
(मध्यकालीन हिन्दी काव्य)
कबीर दास

①

डॉ० अनामिका कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एस० कॉलेज
जहानाबाद

प्रश्न:- कबीरदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालें।

उत्तर- कबीर का स्थान हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवियों में है। कबीर का काव्य हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। कबीर पर हिन्दी भाषा-भाषियों को गर्व है। उनके पद हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के कंठहार हैं। इनके सम्बन्ध में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तो यहाँ तक कहा है कि - "हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ। महिमा में यह व्यक्तित्व केवल एक ही प्रतिद्वन्द्वी जानता है सन्त तुलसीदास। एक ओर घर में कपड़ा बनकर जीवन निर्वाह करना और दूसरी ओर दुनिया की समाज रूढ़ियों, अंधविश्वासों और कुरीतियों पर करारी चोट - ये कबीर के व्यक्तित्व के दो ऐसे पहलू हैं जिनके बीच उनका साहित्य सहज भाव से फैला है।

सहज कबीर आसमान के अंधकार में उस तरह तत्कालीन समाज में एक प्रकाश पुंज की भाँति उदित हुए। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न था। वे एक साथ दार्शनिक, योगी, समाज सुधारक, भक्त एवं कवि सभी कुछ थे।

कबीर समाज सुधारक थे। कबीर ने अपने समय के सारे समाज को खुली आँखों से देखा था। उन्होंने तत्कालीन समाज में फैली तमाम कुरीतियों और अंधविश्वासों का घोर विरोध किया। कबीर जिस युग में हुए वह जटिल जाति बंधनों, वर्ग विभाजनों तथा धार्मिक विरोधों का युग था। समाज में अछूतों एवं निम्न वर्ग के लोगों को कोई स्थान नहीं दिया जाता था। कबीर स्वयं भी ऐसे वर्ग से सम्बन्धित थे। अतः उन्हें भोगी जाने वाली इन यातनाओं का अच्छा अनुभव था। उनके अपने पंथ में भी ऊँच-नीच और जाति-पाँति

के बीच समाज का आडम्बरों फैला हुआ था। कबीर ने सर्वप्रथम इन्हीं को मिटाने का प्रयास किया। इनकी दृष्टि में सभी मानव समान हैं। न वे हिन्दू हैं न वही, न वे मुल्ला हैं न पंडित और न वे ब्राह्मण हैं न शूद्र। उनका तो स्पष्ट दृष्टिकोण है कि भगवान के भक्त की किसी से जाति नहीं पूछनी चाहिए —

संतों जात न पूछो निरगुनियाँ।
साध ब्राह्मण साध छत्तरी साधै जाति बनियाँ।
साधन मां छत्तीस कौम है टेढ़ी तोर पुछनियाँ।
साधै नाऊ साधै धोबी, साधजाति है बरियाँ।

कबीर के समय में उत्तरभारत के अन्तर्गत हिन्दू और मुसलमान दो प्रधान जातियाँ निवास करती थीं और इन दोनों की ही अपनी-अपनी आस्थाओं, रीति-रिवाजों, सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताओं इत्यादि के बारे में कट्टरता विद्यमान थी। द्वेष एवं वैमनस्य व्याप्त था तथा कोई भी किसी से समझौता करने के लिए तैयार नहीं था। उस समय हिन्दू एवं मुसलमान धर्म के ठेकेदार मौलवी-पंडित जनता को बहकाकर अनेकानेक पाखंडों, अंधविश्वासों एवं मिथ्या आडम्बरों में फँसाये रखते थे तथा अपने मत को श्रेष्ठ प्रतिपादित करते हुए पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष को प्रश्रय देते थे। इससे समाज और देश का संतुलन बिगड़ रहा था। उस समय दोनों जातियों में एकता स्थापित करने की आवश्यकता थी। कबीर दोनों जातियों के बाह्याडम्बरों पर प्रहार करते हुए उनमें एकता स्थापित करने का कार्य करते हैं। वे स्पष्ट कहते हैं कि भगवान को मंदिर-मस्जिद में खोजने की आवश्यकता नहीं है। वे कहते हैं कि पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान, तीर्थ-व्रत तथा कर्मकाण्ड इत्यादि से भगवान को प्राप्त नहीं किया जा सकता। भगवान को केवल सच्चे दिल से पुकारने की आवश्यकता है। भगवान को कहीं खोजने की आवश्यकता नहीं है, वो हमेशा हर जगह हर व्यक्ति के पास हर समय उपस्थित हैं —

क्रमशः —